सामाजिक समरसता

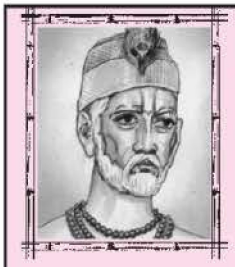

कवि परिचय – कबीर का जन्म बनारस में संवत् 1455 ई. में माना जाता है। नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपत्ति ने इन्हें बनारस के लहरतारा तालाब के किनारे पाया था। इनकी ममता की छाँव में ही कबीर का पालन-पोषण हुआ। कबीर प्रसिद्ध संत रामानंद के शिष्य माने जाते हैं। कबीर की पत्नी का नाम लोई और पुत्र का नाम कमाल था। कबीर सत्संग और पर्यटन प्रिय थे, इसलिए वे अनुभव समृद्ध भी थे, कबीर की जीवनी से संबंधित इन तथ्यों पर विद्वानों के मतभेद हो सकते हैं, किंतु कबीर के काव्य में उल्लिखित कुछ संकेतों से इनकी आंशिक प्रमाणिकता पुष्ट होती है। कबीर के व्यक्तित्व-निर्माण में उनकी जीवनगत परिस्थितियों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। कबीर की मृत्यु संवत् 1575 में मगहर नामक स्थान पर मानी जाती है।

कबीर भक्तिकालीन निर्गुण धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि माने जाते हैं। उनकी प्रामाणिक कृति 'बीजक' है। इसमें साखी, सबद और रमैणी छंदाधारित तीन भाग हैं, कबीर को समाज सुधारक के रूप में मान्यता प्राप्त है। उनकी कविता में समाज की चिन्ता का स्वर प्रमुख है। समाज में व्याप्त वैषम्य, अंधविश्वास और उसकी प्रवृत्तियों पर उन्होंने व्यंग्य का प्रहार किया है। वे ईश्वर की प्राप्ति के लिए ज्ञान को साधन मानते हैं। वे योग-साधना के गूढ़ रहस्यों को भी अपनी कविता में प्रस्तुत करते हैं। वे निराकार ईश्वर को पाने के लिए ज्ञान-मार्ग, इंद्रिय-नियमन तथा योग साधना को महत्वपूर्ण मानते हैं। प्रेम की उदात्त अनुभूति भी उनके काव्य में प्राप्त होती है। नाम महिमा, गुरु का महत्व, सदाचार आदि विषयों पर केन्द्रित रचनाएँ कबीर के काव्य को संत काव्य की व्यापक पृष्ठभूमि प्रदान करती हैं। कबीर के काव्य में यद्यपि अभिव्यक्ति की सहजता है, किंतु उनका काव्य साहित्यिक सौंदर्य से भी अनुप्राणित है। उनकी भाषा को खिचड़ी भाषा कहा गया है। अपने देशाटन के कारण वे जगह-जगह की बोली वाणी से परिचित होते रहे और वहाँ के शब्द भी ग्रहण करते रहे, इसलिए उनकी भाषा में अनेक बोलियों के शब्द आ गए हैं। उनके प्रतीक, रूपक तथा अन्योक्तियाँ काव्य-साहित्य की धरोहर हैं।

रामनरेश त्रिपाठी

कवि परिचय – रामनेरश त्रिपाठी का जन्म जौनपुर (उ.प्र.) के कोइरीपुर नामक गाँव में सन् 1889 ई. में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा जौनपुर में ही हुई। मात्र बाईस वर्ष की आयु में इन्होंने काव्य रचना के क्षेत्र में पदार्पण किया। सन् 1962 ई. में त्रिपाठी जी का देहावसान हो गया।

रामनरेश त्रिपाठी स्वच्छन्दतावादी भावधारा के प्रतिष्ठित कवि हैं। हिन्दी कविता में स्वच्छन्दतावाद (रोमांटिसिज्म) के जन्मदाता श्रीधर पाठक की काव्य परंपरा को इन्होंने आगे बढ़ाया है। देश-प्रेम और राष्ट्रीयता की अनुभूति इनकी रचनाओं के मुख्य विषय हैं। प्रकृति चित्रण में कवि को अद्‌भुत सफलता मिली है। त्रिपाठी जी की चार काव्य कृतियाँ उल्लेखनीय हैं 'मिलन', 'पथिक', 'मानसी', और स्वप्न। 'वीरबाला', 'लक्ष्मी' और 'वीरांगना' इनके उपन्यास तथा 'सुभद्रा', 'जयन्त' और 'प्रेमलोक' नाट्य कृतियाँ हैं।

रामनरेश त्रिपाठी प्रकृति के सफल चितेरे हैं। उन्होंने अपनी कृतियों में प्रकृति का चित्रण व्यापक, विशद् और स्वतंत्र रुप से किया है। सहज मनोरम प्रकृति चित्रों में छायावादी झलक स्पष्ट दिखाई देती है। छायावादी शैली का मानवीकरण और रूमानियत कवि की रचनाओं में यत्र-तत्र विद्यमान है। श्री त्रिपाठी की काव्य भाषा सहज, शुद्ध और खड़ी बोली है। कविता में व्याकरणिकं नियमों का विशेष पालन किया गया है। उन्होंने कहीं-कहीं लोक प्रचलित उर्दू छन्दों एवं शब्दों का प्रयोग किया है।

द्विवेदी युग और छायावाद के मध्य एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में रामनरेश त्रिपाठी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। छायावादी भाषा-शैली का स्रोत उनकी काव्य कृतियों में देखा जा सकता है। इन्हीं रचनाओं से हिन्दी काव्यधारा मुड़कर छायावाद के रूप में विकसित और गतिशील होती है।

केन्द्रीय भाव

सामाजिक जीवन के अन्तर्विरोधों को समाप्त करने का लक्ष्य ही सामाजिक समरसता का आधार है। समाज एक संपूर्ण इकाई है। जिसमें मनुष्य की शक्तियों के विकास की सभी संभावनाएँ निहित हैं। व्यक्ति की शक्तियाँ जीवन की विभिन्न दिशाओं को उद्घाटित करने वाली भले हों किन्तु समष्टि के साथ वह अपनी संवेदना में एक हृदय बनकर स्पंदित हो, पारस्परिक सहयोग और समन्वय के साथ सहानुभूति ही सामाजिक समरसता के लिए अनिवार्य शर्त है।

काव्य में इस तरह की संवेदना का विकास कविता के सामाजिक सत्य को प्रकट करता है। कविता की इसी भाव भूमि की चर्चा करते हुए प्रसिद्ध आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे लोकमंगल की भूमि कहा है। लोकमंगल के अन्तर्गत संपूर्ण समाज के कल्याण का भाव सन्निहित है। हिंदी कविता में यह भाव सदैव से पल्लवित पुष्पित होता रहा है।

मध्यकाल में कबीरदास के माध्यम से सामाजिक समरसता का स्वर मुखरित हुआ था। वे सामाजिक समरसता का आधार व्यक्ति के आचरण में खोजते हैं। अच्छे आचरण वाला व्यक्ति ही सामाजिक समरसता का आधार बन सकता है और अच्छे आचरण के निर्माण हेतु जिन मानवीय गुणों की आवश्यकता है उनकी चर्चा कबीर की प्रस्तुत साखियों में है। संतोषवृत्ति करुणा का विस्तार एवं सभी आत्माओं में परमात्मा के निवास का अनुभव ही सामाजिक समरसता के मूल्यों को सुरक्षित रखने वाले गुण हैं। कबीर की मान्यता थी कि जिनका कर्म ऊँचा होता है वही बड़ा कहा जा सकता है, जाति से कोई व्यक्ति ऊँचा-नीचा नहीं होता है। वस्तुतः गुण ग्राहक समाज ही उदात्त समाज बनाता है।

रामनरेश त्रिपाठी, द्विवेदी युगीन कवि हैं। प्रस्तुत कविता में कवि ने स्पष्ट किया है कि मनुष्य एक कर्तव्यनिष्ठ प्राणी है, किन्तु कभी-कभी वह कर्तव्य विमुख कार्य भी करने लगता है और जीवन के उदात्त उद्देश्यों से विचलित हो जाता है। इस तरह के कार्यों से वह समाज की कोई भलाई नहीं कर पाता है। अपने समाज और अपनी मातृभूमि के प्रति भी मनुष्य में कर्तव्य भावना होना चाहिए, तभी उसकी जीवन यात्रा सार्थक है। कवि की लोक कल्याण की भावना सामाजिक समरसता को उच्च धरातल प्रदान करती है। सरल-सुबोध भाषा में कवि ने अमूल्य जीवन संदेश को प्रसारित किया है।

कबीर की साखियाँ

साई इतना दीजिए, जामैं कुटुम समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय ॥1॥

दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय।
मरी चाम की स्वांस से, लौह भसम ह्वे जाय ॥2॥

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिये ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान ॥3॥

जाति हमारी आतमा, प्रान हमारा नाम।
अलख हमारा इष्ट है, गगन हमारा ग्राम ॥4॥

कामी क्रोधी लालची, इन पै भक्ति न होय।
भक्ति करै कोइ शूरमाँ, जाति वरण कुल खोय ॥5॥

ऊँचै कुल क्या जनमियाँ, जे करणी ऊँच न होइ।
सोवन कलस सुरै भर्‌या, साधू निंद्या सोइ ॥6॥

तरवर तास बिलंबिए, बारह मास फलंत।
सीतल छाया गहर फल, पंखी केलि करंत ॥7॥

जब गुण कूँ गाहक मिलै, तब गुण लाख बिकाइ।
जब गुण कौं गाहक नहीं, कौड़ी बदलै जाइ ॥8॥

सरपहि दूध पिलाइये , दूधैं विष ह्वै जाइ।
ऐसा कोई नां मिलै, सौं सरपैं विष खाइ ॥9॥

करता केरे बहुत गुणं, आगुणं कोई नांहि।
जे दिल खोजौं आपणौं, तौ सब औंगुण मुझ मांहि ॥10॥

- कबीर

जीवन संदेश

जग में सचर अचर जितने हैं सारे कर्म-निरत हैं।
धुन है एक न एक सभी को सबके निश्चित व्रत हैं।
जीवनभर आतप सह वसुधा पर छाया करता है।
तुच्छ पत्र की भी स्वकर्म में कैसी तत्परता है॥

रवि जग में शोभा सरसाता सोम सुधा बरसाता ।
सब हैं जगे कर्म में कोई निष्क्रिय दृष्टि न आता ।
है उद्देश्य नितान्त तुच्छ तृण के भी लघु जीवन का।
उसी पूर्ति में वह करता है अन्त कर्ममय तन का ॥

तुम मनुष्य हो, अमित बुद्धि-बल-विलसित जन्म तुम्हारा।
क्या उद्देश्य रहित है जग में तुमने कभी विचारा ?
बुरा न मानो, एक बार सोचो तुम अपने मन में।
क्या कर्तव्य समाप्त कर लिए तुमने निज जीवन में ?

वह सनेह की मूर्ति दयामयी माता-तुल्य महीं है।
उसके प्रति कर्तव्य तुम्हारा क्या कुछ शेष नहीं है ?
हाथ पकड़कर प्रथम जिन्होंने चलना तुम्हें सिखाया ।
भाषा सिखा हृदय का अद्‌भुत रूप स्वरूप दिखाया ॥

जिनकी कठिन कमाई का फल खाकर बड़े हुए हो।
दीर्घ देह के बाधाओं में निर्भय खड़े हुए हो।
जिनके पैदा किए, बुने वस्त्रों से देह ढके हो।
आतप-वर्षा-शीत-काल में पीड़ित हो न सके हो॥

क्या उनका उपकार-भार तुम पर लवलेश नहीं है।
उनके प्रति कर्तव्य तुम्हारा क्या कुछ शेष नहीं है।
सतत् ज्वलित दुख-दावानल में जग के दारुण रन में।
छोड़ उन्हें कायर बनकर तुम भाग बसे निर्जन में॥

यही लोक-कल्याण-कामना यही लोक-सेवा है।
यही अमर करने वाले यश-सुरतरु का मेवा है ।
जाओ पुत्र ! जगत् में जाओ, व्यर्थ न समय गँवाओं।
सदा लोक-कल्याण-निरत हो जीवन सफल बनाओ॥

जनता के विश्वास कर्म मन ध्यान श्रवण भाषण में।
वास करो, आदर्श बनो, विजयी हो जीवन-रण में।
अति अशांत दुखपूर्ण विशृंखल क्रांति-उपासक जग में।
रखना अपनी आत्म-शक्ति पर दृढ़ निश्चय प्रतिपग में॥

जग की विषम आँधियों के झोंके सम्मुख हो सहना।
स्थिर उद्देश्य-समान और विश्वास-सदृश दृढ़ रहना ।
जाग्रत नित रहना उदारता-तुल्य असीम हृदय में ।
अन्धकार में शांत चन्द्र-सा, ध्रुव-सा निश्चल भय में ॥

जगन्नियंता की इच्छा से यह संसार बना है ।
उसकी ही क्रीड़ा का रूपक यह समस्त रचना है ।
है यह कर्म-भूमि जीवों की यहाँ कर्मच्युत होना ।
धोखे में पड़ना अलभ्य अवसर से है कर धोना ॥
पैदा कर जिस देश जाति ने तुमको पाला पोसा ।
किए हुए है वह निज हित का तुमसे बड़ा भरोसा ।
उससे होना उऋण प्रथम है सत्कर्तव्य तुम्हारा ।
फिर दे सकते हो वसुधा को शेष स्वजीवन सारा ॥

- रामनरेश त्रिपाठी
('पथिक' से)

अभ्यास

बोध प्रश्न-

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. लोहा किसकी स्वाँस से भस्म हो जाता है ?
2. भक्ति किस प्रकार के प्राणियों से नहीं हो सकती ?
3. गुण लाख रुपयों में कब बिकता है ?
4. संसार में विद्यमान सचर-अचर प्राणी क्या कर रहे हैं ?
5. दयामयी माता के तुल्य किसे माना गया है ?
6. जीवन को सफल बनाने के लिए कवि क्या निर्देश देते हैं ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. कबीर ईश्वर से क्या माँगते हैं ?
2. कवि के अनुसार किस प्रकार के वृक्ष के नीचे विश्राम करना चाहिए ?
3. साधु से किस प्रकार के प्रश्न नहीं करना चाहिए ?
4. 'लोक कल्याण कामना' से कवि का क्या आशय है ?
5. कवि जग की विषम आँधियों के सम्मुख किस-किस प्रकार के स्वभाव की अपेक्षा कर रहा है?
6. कर्मच्युत होने से क्या परिणाम होगा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. दुर्बल को सताने का क्या दुष्परिणाम होता है ?
2. अवगुण का निवास कहाँ है ?
3. किन विशेषताओं को खोकर भक्ति की जा सकती है?
4. मनुष्य किन-किन शक्तियों से सम्पन्न है, संसार में जीने का उसका उद्देश्य लिखिए ?
5. जीवन संदेश कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।
6. संसार मनुष्य के लिए एक परीक्षा स्थल है, ऐसा कवि ने क्यों कहा है ?

काव्य सौन्दर्य

निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

(क) ऊँचै कुल क्या जनमियाँ, जे करणी ऊँच न होइ।
सोवन कलस सुरै भरया, साधूं निंद्या सोइ ॥

(ख) जब गुण कूं गाहक मिलै, तब गुण लाख बिकाइ।
जब गुन कौं गाहक नहीं, तब कोड़ी बदलै जाइ॥

(ग) तुम मनुष्य हो, अमित बुद्धि-बल-विलसित जन्म तुम्हारा।
क्या उद्देश्य-रहित है जग में तुमने कभी विचारा ?
बुरा न मानों, एक बार सोचो तुम अपने मन में ।
क्या कर्तव्य समाप्त कर लिए तुमने निज जीवन में ?

ध्यान दीजिए -

करुण रस - **''सब बंधुन को सोच तजि, तजि गुरुकुल को नेह ।**
हा सुशील सुत ! किमि कियो अनत लोक में गेह ॥''

पुत्र की मृत्यु पर पिता के विलाप का करुण चित्र प्रस्तुत किया गया है। हे पुत्र! तुमने अपने सब बंधुओं की चिंता और गुरुकुल का स्नेह छोड़कर, इस लोक को त्याग कर परलोक में अपना घर क्यों बना लिया ?

उपर्युक्त उदाहरण में

स्थायी भाव	-	शोक
आश्रय	-	पिता
आलंबन	-	पुत्र
अनुभाव	-	पिता के उद्‌गार
संचारीभाव	-	दीनता, मोह, विषाद

करुण रस - सहृदय के हृदय में स्थित शोक नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के साथ संयोग हो जाता है तब वहाँ करुण रस की निष्पत्ति होती है।

प्रश्न -: करुण रस को उदाहरण सहित समझाइए ।

इसे भी जानिए -

गीतिका - S I S S S I S S S I S I I S I S   = 14+12=26 मात्राएँ

''साधु भक्तों में सुयोगी, संयमी बढ़ने लगे।
I S S S S I S I I S I S I I S I S
सभ्यता की सीढ़ियों पर, सूरमा चढ़ने लगे॥
S I S S S I S S S I S I I S I S
वेद मंत्रों को विवेकी, प्रेम से पढ़ने लगे।
S I S S S I S S S I S I I S I S
वंचकों की छातियों में, शूल से गढ़ने लगे॥''

गीतिका छंद - यह एक मात्रिक सम छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 14 व 12 की यति से 26 मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक चरण के अंत में लघु, गुरु होता है।

प्रश्न - गीतिका छंद को अन्य उदाहरण सहित समझाइए ।

और भी समझिए -

हरिगीतिका छंद -   I I I S I S S I I S I I S S I S I S S   = 16+12=28 मात्राएँ

वह सनेह की मूर्ति दयामयि, माता तुल्य मही है।

।।ऽ ।। ।।ऽ ऽऽऽ ऽ।। ऽ।।ऽ ऽ

उसके प्रति कर्तव्य तुम्हारा, क्या कुछ शेष नहीं है ॥

ऽ। ।।। ।। ।।। ।ऽऽ ।।ऽ।ऽ ।ऽऽ

हाथ पकड़ कर प्रथम जिन्होंने, चलना तुम्हें सिखाया।

ऽऽ ।ऽ ।।। ऽ ऽ।। ऽ। ।ऽ। ।ऽऽ

भाषा सिखा हृदय का अद्‌भुत, रूप स्वरूप दिखाया ॥

हरिगीतिका - यह सम मात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 16-12 की यति के साथ 28 मात्राएँ होती है।

प्रश्न 1. हरिगीतिका छंद के लक्षण देते हुए एक अन्य उदाहरण लिखिए ।

योग्यता विस्तार

1. 'राष्ट्रीय सेवा योजना' अथवा 'एन.सी.सी' के शिविर में किए गए कार्यों पर केन्द्रित एक आलेख तैयार करिए तथा सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए।
2. लोक सेवा के लिए समर्पित महापुरुषों की जीवनियों का संग्रह करिए।
3. सामाजिक समरसता पर केन्द्रित सूक्तियों की लेख-पट्टियाँ तैयार करिए और कक्षा में लगाइए।

शब्दार्थ

साई = स्वामी, प्रभु। **जामें** = जिसमें। **कुटुम** = कुटुम्ब। **जाकी** = जिसकी। **हाय** = पीड़ा भरी सांस। **भसम** = भस्म, राख। **तरवार** = तलवार। **अलख** = ईश्वर, आराध्य। **सोवन** = स्वर्ण, सोना। **सुरै** = सुरा, शराब। **निंद्या** = निंदा। **गहर** = पर्याप्त। **पंखी** = पक्षी। **केलि** = क्रीडा, आनंद। **सरपें** = सर्प का। **केरे** = के। **औंगुण** = अवगुण, दोष। **करता** = कर्ता, भगवान। **आपणौं** = अपना।

कर्म=निरत - काम, धंधे में लगे हुए। **वसुधा** = पृथ्वी। **स्वकर्म** = निजी कर्म या अपना कर्म। **अमित** = अत्यधिक। **आतप** = गर्मी। **दावानल** = जंगल की आग। **सुरतरु** = कल्पवृक्ष। **लवलेश** = थोड़ा। **सतत** = लगातार। **विषम** = विपरीत। **कर्मच्युत** = कार्य से हटना। **जगन्नियंता** = ईश्वर। **उऋण** = ऋण मुक्त।